"मराठी साहित्य मे घुमंतू जनसमुदाय"

प्रा. हंबीरराव मा. चौगले
हिन्दी विभागाध्यक्ष
स.का.पाटील सिंधुदुर्ग महाविद्यालय,मालवण
hmchougale@gmaillcom
9404388118

सारांश

घुमंतू जन समुदाय का साहित्य मुख्यतः 1960 के पश्चात मराठी साहित्य का एक विचार केंद्र के रूप में चर्चित रहा. घुमंतू जन समुदाय के साहित्य ने संपूर्ण स्वतंत्रता का आग्रह करते हुए इस मनुष्य को सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक गुलामगिरी से मुक्त किया जाना चाहिए इस बात का पुरजोर समर्थन किया. किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को संघर्ष करना ही पड़ता है इसलिए घुमंतु समुदाय के लोगों को क्रांति के अलावा दूसरा कोई मार्ग नजर नहीं आया. घुमंतु समुदाय के साहित्यकारों के प्रमुख प्रेरणा स्रोत डॉक्टर बाबासाहब अंबेडकर ही थे जिन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्र इन लोगों के विकास के लिए अलग-अलग आंदोलन खड़े किए. उन्होंने जो विचार व्यक्त किए यही विचार घुमंतू जन समुदाय के प्रेरणा स्रोत रहे।

बीज शब्द- मराठी, साहित्य, घुमंतू , जनसमुदाय।

प्रास्ताविक-

भारतवर्ष में घुमंतू जनसमुदाय मुख्यधारा से अलग जनसमुदाय रहा है. पूरे भारतवर्ष में यह जन समुदाय देखने मिलता है। काम की वजह से एक जगह से दूसरी जगह यह जनजातियां अपने परिवारों को लेकर सदियों से घूमती रही है. इनका कोई निश्चित आवास स्थान नहीं होता, भारत में जातियों के आधार पर सामाजिक व्यवस्था बनी रही है और इसी के कारण घुमंतू जनजातियां एक जगह से दूसरी जगह घूम कर अपनी जरूरतों को पूरा करती रही है. महाराष्ट्र में अधिकतरबेरड, कैकाडी, कंजारभाट, बंजारा, राजपारधी, रामोशी,वडर,छप्परबंद आदि घुमंतू समाज की जनजातियां देखी जाती है. इन जातियों की कई उपजातियां भी पाई जाती है जैसे नायकवाड़ी, तलवार, वाल्मीकी, पाथरवट, माकड़ वाले, बंजारा, आदि जनसमुदाय इसमे शामिल होती है। इन जनजातियो की आर्थिक सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति का वर्णन घुमंतू साहित्य मे मिलता है। मुख्यता मराठी साहित्य मे इसका वर्णन मिलता है।

घुमंतू जनसमुदाय और मराठी साहित्य-

1960 के उपरांत मराठी साहित्य में दलित, ग्रामीण, स्त्रीवादी, आदिवासी इस प्रकार के अलग-अलग वांग्मय प्रवाह निर्मित हुए. इन प्रवाहों के माध्यम से उपेक्षित समाज के लोगों ने अपने सुख-दुख को यहां व्यक्तकिया। 15 अगस्त 1947 भारत को जब स्वतंत्रता मिली उसके पश्चात डॉ बाबासाहेब आंबेडकर जीने लिखी हुई राज्यघटना 26 जनवरी 1950 के दिन लागू की गई. इस राज्यघटना में भारतीय लोगों को मौलिक अधिकार दिए गए, इन अधिकारों में प्रमुखता लिखने का अधिकार, बोलने का अधिकार मुख्य अधिकार हैं इसके माध्यम से उपेक्षित समाज के लोग बोलने लगे, लिखने लगे और इसी के माध्यम से साहित्य की निर्मिति होने लगी। घुमंतू जन समुदाय के लोगों ने प्रमुखता मराठी भाषा में लेखन किया है. मुख्य रूप से लक्ष्मण माने, रामनाथ चौहान, दादा साहेब मोरे, विमल मोरे आदि लोगों का इसमें अंतरभाव होता है. इन सब साहित्यकारों ने विमुक्त जन समुदाय के लोगों की पीड़ा एवं वेदना को साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया. इसी के साथ साथ विमुक्त जन समुदाय के लोगों की प्रथाएं एवं रीति-रिवाजों का उल्लेख किया. सिर्फ मराठी ही नहीं संपूर्ण भारतीय साहित्य को एक अनमोल देन के रूप में साहित्य रूपी भेंट प्रदान की. इन घुमंतू लोगों के साहित्य ने मराठी साहित्य को समृद्ध बनाया. जिन्हें मनुष्य के रूप में समझा नहीं जाता था, जिनकी गणना मानव के रूप में की नहीं जाती थी, जो किसी एक जगह पर रहते नहीं थे, गांव के बाहर गंदी जगह पर रहकर जीवन गुजारते थे ऐसे लोगों का दुख एवं दर्द घुमंतू जन समुदाय के साहित्य में देखने को मिलता है। 'उपरा' इस किताब में लक्ष्मण माने जी ने कैकाडी समाज की व्यथा को चित्रित किया है। इस समाज की प्रथाओं के कारण यह समाज पतन की ओर किस प्रकार चला गया साथ ही इस समाज के लोग किस प्रकार अपना जीवन बिता रहे थे यह देखने को मिलता है. 'गबाल' जैसी आत्मकथा के माध्यम

से दादा साहेब मोरे जी ने कुडमुड़े जोशी इस समाज के लोगों के दुख दर्द को व्यक्त किया है. घर-घर घूम कर लोगों का भविष्य बताने वाले इस व्यक्ति के घर में दुख, गरीबी और वेदना के अलावा और कुछ नहीं रहता इसका चित्रण लेखक ने बहुत अच्छे तरीके से किया है. इनकी धर्मपत्नी विमल मोरे जी ने 'तीन दगडाची चुल' इस किताब के माध्यम से महिलाओं की यातना को वानी दी है. रामनाथ चव्हाण इस लेखक ने अपनी लेखनी के द्वारा घुमंतू जन समुदाय की प्रथा परंपराओं के साथ उनके दुख दर्द के कारण कौन से है? इस बात को बताते हुए अंबेडकरी विचारधारा से दूर रहने वाले इन लोगों को कितनी पीड़ा सहन करनी पड़ती है इस बात का जिक्र किया है. अज्ञान एवं अंधश्रद्धा के कारण घुमंतू जन समुदाय के लोग आज भी अनेकानेक सुख-सुविधाओं से किस प्रकार दूर है इसका जिक्र इन लेखकों ने अपनी किताबों में किया है. "उचल्या" यह आत्मकथा लिखने वाले लेखक लक्ष्मण गायकवाड़ जी ने छूट मूट की चोरी चकारी करने वाले घुमंतू जनसमुदाय के दुख लोगों को परिचित कराया है. उनका यह चोरी करना उनकी प्रथा से ही संबंधित है इसकी भी चर्चा की है. चोरियां करते करते यह लोग किस प्रकार दूराचरण की ओर चले गए इसका जिक्र भी लेखक ने यहां किया है. भीमराव गस्ती इस लेखक ने अपनी 'बेरड़' इस आत्मकथा में बेरड़ समाज की व्यथा को साथ ही अनेक सालों से उन पर थोपी गई गलत बातों के कारण उन्हें जिन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था उसका विस्तृत चित्रण इस आत्मकथा में किया गया है. यह घुमंतू जनसमुदाय किसी एक जगह पर न रहते हुए गांव के बाहर रहकर किस प्रकार लोगों का संरक्षण और उनके विकास को लेकर प्रतिबद्ध थे, इसका पूरा चित्रण इस साहित्य में देखने को मिलता है. घुमंतू जन समुदाय का साहित्य यदि मराठी भाषा में लिखा गया है फिर भी इन लेखकों ने अपनी बोली भाषा का प्रयोग अत्यंत प्रभावी ढंग से किया है. यहां बोली जाने वाली भाषा, मुहावरे, वाक्य प्रचार, विशिष्ट लोगों के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले विशिष्ट शब्द इसका सुंदर चित्रण करते हुए मराठी भाषा को समृद्ध करने का प्रयास इन लोगों ने किया है.

घुमंतू जन समुदाय का साहित्य मुख्यतः 1960 के पश्चात मराठी साहित्य का एक विचार केंद्र के रूप में चर्चित रहा. घुमंतू जन समुदाय के साहित्य ने संपूर्ण स्वतंत्रता का आग्रह करते हुए इस मनुष्य को सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक गुलामगिरी से मुक्त किया जाना चाहिए इस बात का पुरजोर समर्थन किया. किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को संघर्ष करना ही पड़ता है इसलिए घुमंतु समुदाय के लोगों को क्रांति के अलावा दूसरा कोई मार्ग नजर नहीं आया. घुमंतु समुदाय के साहित्यकारों के प्रमुख प्रेरणा स्रोत डॉक्टर बाबासाहब अंबेडकर ही थे जिन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्र इन लोगों के विकास के लिए अलग-अलग आंदोलन खड़े किए. उन्होंने जो विचार व्यक्त किए यही विचार घुमंतू जन समुदाय के प्रेरणा स्रोत रहे. जाति व्यवस्था, धर्म, वर्ण इन बातों को लेकर डॉक्टर बाबासाहब अंबेडकर जी ने मौलिक संशोधन किया और वर्ण व्यवस्था पर टिका हुआ हिंदू समाज बिना सीढ़ी के महल जैसा है इसका जिक्र किया. जिन लोगों ने जिस मंजिल पर जन्म लिया उसी मंजिल पर वह जीवन भर रहेंगे इस प्रकार की व्यवस्था की गई थी इसका अंबेडकर जी ने पुरजोर विरोध किया. इस सबसे छुटकारा पाने के लिए घुमंतू जन समुदाय को शिक्षा हासिल करनी होगी. संगठित होना होगा और संघर्ष करना पड़ेगा यह संदेश दिया डॉक्टर बाबासाहब अंबेडकर जी ने दिया. बाबासाहब अंबेडकर जी ने लिखी किताब "शूद्र पूर्वी कोण होते" मे अस्पृश्यता का उदय कहां हुआ, कांग्रेस और गांधी जी ने इनके लिए क्या किया आदि बातों का वर्णन इस ग्रंथ के माध्यम से डॉक्टर बाबा साहब अंबेडकर जी ने किया, और घुमंतू जन समुदाय के प्रश्न समाज के सामने खड़े किए.

1925 के बाद भारत में घुमंतू जन समुदाय की पहली पीढ़ी लेखन करते हुए हमें नजर आती है. शुरुआत में बहिष्कृत भारत, प्रबुद्ध भारत अन्य नियतकालिकों के माध्यम से स्फुट लेखन की शुरुआत हुई. इसमें तुकाराम पुरोहित, अन्नाभाऊ साठे इन्होंने विपुल मात्रा में लेखन किया तथा दलित साहित्य की दूसरी पीढ़ी ने काव्य लेखन आत्मकथन आत्मक लेखन उपन्यास नाटक वैचारिक लेखन के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया. इसी के साथ साथ नारायण सुर्वे, केशव मेश्राम, प्रह्लाद चेंदवनकर, दया पवार सोनकांबले, माधव कोंडविलकर, लक्ष्मण माने प्रेमानंद गज्वी, दत्ता भगत, वामन होवाल, योगीराज वाघमारे, वामन निंबालकर आदि साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई, तथा शरण कुमार लिंबाले, रामनाथ चौहान, सुरेखा भगत, सुषमा अंधारे, प्रज्ञा लोखंडे, लक्ष्मण गायकवाड इस तीसरी पीढ़ी के साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई. घुमंतू जनसमुदाय से संबंधित लेखन मराठी साहित्य में एक समृद्ध परंपरा बन गई. आत्मचरित्र, आत्मकथात्मक लेखन साहित्य प्रकार मराठी घुमंतू जन समुदाय ने दी हुई देन है. घुमंतू जन समुदाय ने जो जिया, अनुभव किया उसी को लिखा. साथ ही साथ तत्कालीन समाज के अनेक संदर्भ भी इसमें हमें देखने को मिलते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 1960 के पश्चात भारतीय साहित्य में निर्मित एक महत्वपूर्ण साहित्य विधा के रूप में घुमंतू जन समुदाय के साहित्य की निर्मिति हुई इस. विधा के माध्यम से उपेक्षित एवं हाशिए पर पड़े जन समुदाय के लोगों के प्रश्न समाज के सामने लाए गए उपेक्षित लोगों के दुख एवं पीड़ा को सबके सामने लाया गया इसलिए घुमंतू जन समुदाय का साहित्य भारतीय साहित्य में एक विशेष महत्व रखता है.

संदर्भ सूची-

1) उपरा – लक्ष्मण माने
2) उचल्या – लक्ष्मण गायकवाड़
3) गबाल- महादेव मोरे
4) तीन दगडंची चूल- विमल मोरे
5) अस्पृश्य मूलचे कोंण?- डॉक्टर बाबासाहब आंबेडकर
6) साहित्य शोध आणि बोध- वा.ल.कुलकर्णी